

चनम् । स मुखं प्रेतते राजा MBh. 12, 5241.

— प्रणि *bedenken*: प्रणिषान्नीहि कृत्यते हता दोषे न सत्यपि BHATT. 9, 100.

— निम् *unterscheiden, bestimmen; herausfinden, auffinden*: न द्वैवेह स्वी चन पाणी निर्जानीयुः ÇAT. Br. 4, 2, 1, 2. शो नोदेति (चन्द्रः) अथस्य वा हेतोरनिर्ज्ञाय वै 11, 1, 4, 1. विद्युद्दे विद्युत्य वृष्टिमुप्रविशति सातर्धयिते तो न निर्जानति AIT. Br. 8, 28.

— विनिम् *dass.*: अपि यत्र स्वः पाणिर्न विनिर्ज्ञायते ÇAT. Br. 14, 7, 2, 5.

— परि *bemerkten, erkennen, kennen lernen, in Erfahrung bringen, sich vergewissern, genau wissen*: इन्द्रो दत्तं परि ज्ञानादकीर्णाम् RV. 10, 139, 6. एतैः सर्वैर्भिज्ञानैः परिज्ञाय R. 6, 8, 3. ताम् — परिज्ञाय HIT. 42, 3. RĪGĀ-TAR. 4, 519. 5, 219. तपस्विभिः कैश्चित्परिज्ञातो ऽस्मि ÇĀK. 27, 1. PĀNĪKĀT. 115, 18. वृषभो ऽयमिति परिज्ञाय 23, 1. सम्यक्परिज्ञाय 21, 11. 33, 14. निपुणातरं परिज्ञाय 115, 16. अनुबन्धं परिज्ञाय देशकालौ च तन्नतः M. 8, 126. तनु सर्वम् — धर्मराज्ञेन — श्रितैराशु परिज्ञातं भारद्वाजचिकीर्षितम् MBh. 7, 467. पर्यज्ञानन्न चैव ते 3, 10334. R. 5, 56, 134. HIT. I, 51. II, 85. 20, 13. KATHĀS. 4, 73. VET. 9, 10. श्रवामिकृमति — परिज्ञातुं बलं कृत्स्नं तवेदम् R. 6, 1, 24. देवैरपि न शक्यस्त्वं परिज्ञातुं कुतो मया MBh. 3, 6099. त्वं मया परिज्ञातः PĀNĪKĀT. 99, 8. परिज्ञातस्त्वं मया सम्यक् सुकृत् 117, 16. परिज्ञातस्य मे राज्ञा शीलैर्न च कुलेन च MĀKĪH. 143, 2. तत्कारणं ज्ञारं परिज्ञाय *nachdem sie den Liebhaber als Ursache davon erkannt hatte* HIT. 29, 17. परिज्ञायते कतरेण दिग्विभागेन गतः स ज्ञात्म्: *weiss man genau?* VIKR. 5, 14. परिज्ञात *bekannt*: परिज्ञातस्य कर्मभिः R. 4, 42, 10. मध्यदेशं MBh. 12, 6310. परिज्ञातान्वनस्पतीन् 13, 4979 (vgl. M. 4, 39, wo st. dessen प्रज्ञात). स्वेन नाम्ना परिज्ञातम् HARIV. 2821. — Vgl. कुपरिज्ञात, परिज्ञातर u. s. w.

— प्र *erkennen, verstehen*: insbes. den Weg oder die Richtung oder auch die Art und Weise eines Verfahrens erkennen, Etwas zu finden wissen, sich zurechtfinden, Bescheid wissen, sich orientieren: प्र नीचीरग्ने ऋषीरज्ञानम् RV. 1, 72, 10. प्र पितृयाप्यं पन्थीं ज्ञानाति AV. 8, 10, 19. 20. 15, 12, 5. त्वयो लोकमङ्गिरसः प्राज्ञान् तं लोकं पुण्यं प्र ज्ञैषम् 9, 5, 16. ततो वै ते प्र यज्ञमज्ञानं प्र स्वर्गं लोकम् (vgl. स्वर्गं लोकं न प्रज्ञानाति मूढः P. 1, 3, 76, Sch.) AIT. Br. 2, 1. ते देवा न किं चनाशक्नुवन्कर्तुं न प्राज्ञानंस्ते ऽब्रुवन्नदितिं लयेमं यज्ञं प्रज्ञानमेति 1, 7. मयैव प्राचो दिशं प्रज्ञानाय ebend. TS. 6, 1, 5, 1. 2. ÇAT. Br. 3, 2, 2, 1. fgg. वाचा हि मुग्धं प्रज्ञायते ऽथात्र प्रज्ञाते यथापूर्वं करोति *denn mittelst der Rede kann man sich im Unklaren zurechtfinden, und hat man sich zurechtgefunden (d. h. kennt man die Ordnung), so vollzieht man die Handlungen nach der Reihe* 4, 5, 4, 3. 6, 7, 8. 11, 5, 5, 4. fgg. स्वर्गमग्निं नचिकेतः प्रज्ञानम् KATHOP. 1, 14. ष्येष्ठश्चेन्न प्रज्ञानाति कनीयान्किं करिष्यति MBh. 1, 5407. partic. praes.: प्रज्ञानतीव न दिशौ मिनाति RV. 1, 124, 3. पुर एतु प्रज्ञानम् 10, 17, 5. 6. देवेभ्यो कृत्यं वक्तु प्रज्ञानम् 16, 9. AV. 2, 26, 2. इमां शालां बृहस्पतिर्नि मिनेतोतु प्रज्ञानम् 3, 12, 4. येन यज्ञेन बृहवो यतिं प्रज्ञानसः 13, 3, 17. अदिस्सत्तं दापयति प्रज्ञानम् *den Kargen weiss er zum Geben zu bringen* VS. 9, 24. तं प्रत्युवाच — अज्ञानसं प्रज्ञानती R. 2, 72, 14. प्रज्ञा = प्रज्ञानती H. 322. *unterscheiden, erkennen*: यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च । अयथावत्प्रज्ञानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥ BHAG. 18, 31. वाच्यावाच्ये हि कुपितो न प्रज्ञानाति कर्कचित् MBh. 3, 1069. ततः स तमसाविष्टो न स्म

किञ्चित्प्रज्ञानवान् 4, 1948. गर्जितेन च दैत्यानां न प्राज्ञायत किं च न ARĀ. 8, 6. MBh. 3, 8532. *gewahrt werden*: न च किञ्चित्प्रज्ञानवान् 14109. *wissen von, erfahren von*: न हि प्रज्ञानामि तव प्रवृत्तिम् BHAG. 11, 31. नान्यं प्रज्ञास्यते किञ्चिन्मानवं पितृवर्जितम् R. 1, 8, 8. न प्राज्ञायत पाण्डवाः *man hat nichts von den P. erfahren, man weiss nichts von ihnen* MBh. 4, 87. दमयत्या गतः सार्धं न प्राज्ञायत कर्कचित् (v. l. कस्यचित्) N. 17, 3. न च स्त्रियं प्रज्ञानाति कश्चिद्राप्रतयौवनः *weiss nichts von einem Weibe, tritt in kein näheres Verhältniss zu ihr* MBh. 1, 2471. *ausfindig machen*: श्रयतनं नः प्रज्ञानीहि AIT. Up. 2, 1. — प्रज्ञात *unterschieden, deutlich zu erkennen*: आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणात् M. 1, 5. *bekannt (H. 1493), anerkannt; kenntlich, deutlich; gewöhnlich*: प्रदक्षिणानि कुर्वति प्रज्ञातांश्च वनस्पतीन् M. 4, 39 (vgl. MBh. 13, 4979, wo st. dessen परिज्ञात). अनुष्टुभः (im Gegens. zu künstlich erzeugtem Metrum) AIT. Br. 4, 4. एतद्ध न्वेव प्रज्ञातं कौरुपञ्चालं यज्ञतुवतम् ÇAT. Br. 1, 7, 2, 8. KĀTJ. ÇR. 22, 11, 26. ÇAT. Br. 2, 6, 2, 7. श्रामिष्टोमिकान्यकान् 5, 1, 2, 1. 4, 5, 9, 1. श्रमिष्ट 3, 8, 1, 5. (चरुः) श्रयं त्वेवाग्रावैक्षवः प्रज्ञातः 1, 2, 5. ÇĀNKH. ÇR. 17, 1, 13. KĀTJ. ÇR. 6, 4, 13. 6, 9. — Vgl. प्रज्ञ, प्रज्ञा, प्रज्ञान, 1. अज्ञज्ञानि. — caus. 1) *den Weg zu Etwas zeigen*: प्राचो प्रेक्षीदं प्रज्ञाय ÇAT. Br. 4, 6, 2, 6. *verrathen*: राजभावस्तावत्प्रज्ञापितो भवति ÇĀK. 12, 12, v. l. — 2) *Jmd auffordern*: भगवान्प्रज्ञप्त एवासने न्यषीदत् LALIT. ed. Calc. 6, 16.

— अनुप्र *nach Jmd sich zurechtfinden, — den Weg finden*: यज्ञेन वै देवा ऊर्धाः स्वर्गं लोकमायंस्ते विभयुरिमं नो दृष्ट्वा मनुष्याश्च ऋषयश्चानुप्रज्ञास्यतीति AIT. Br. 2, 1. *auffinden*: श्रोतिर्नु प्रज्ञानम् RV. 3, 26, 8. न हैतं देवमात्मानमनुप्रज्ञानीयात् ÇAT. Br. 7, 4, 2, 19. — Vgl. अनुप्रज्ञान.

— अभिप्र *an Jmd denken, für Jmd sorgen*: तमशनायापिपासे अन्नतामावाध्यामभिप्रज्ञानीकीति AIT. Up. 2, 5. SĀJ. ergänzt अधिष्ठानम् und erklärt अभि° durch चिन्तय *denke aus*.

— प्रतिप्र *wieder auffinden*: तथा तं लोकं प्रतिप्रज्ञास्यामस्तथा न जिह्सा एष्यामः ÇAT. Br. 3, 6, 2, 22.

— संप्र *unterscheiden, erkennen, genau kennen*: न दिशः संप्रज्ञानामि नाकाशं न च मेदिनीम् MBh. 12, 1872. HARIV. 13355. बहूनि यज्ञरूपाणि नानाकर्मफलानि च ॥ तानि यः संप्रज्ञानाति MBh. 12, 2319. वितर्कविचारान्द्रास्मितानुगमात्संप्रज्ञातः (समाधिः) JOGAS. 1, 17.

— प्रति 1) *anerkennen, gut aufnehmen; gutheissen, billigen*: आ नस्तुज्ञं रयिं भ्राशं न प्रतिज्ञानते RV. 3, 45, 4. वास्तौष्यते प्रति ज्ञानीकृष्मान् 7, 54, 1. प्रति वा जानतु पितरः परैतम् AV. 18, 4, 51. 52. वाचम् 19, 4, 4. श्राधानाप्रतिज्ञात *dessen Feueranlegung nicht genehmigt d. h. ohne Erfolg geblieben ist* (andere Erkl. in den Scholien) KĀTJ. ÇR. 4, 11, 1. कश्चिन्न पाने श्रूते वा क्रोडामु प्रमदासु च । प्रतिज्ञानति पूर्वक्षि व्ययं व्यसनन्नं तव ॥ MBh. 2, 203. ऋणो देये प्रतिज्ञाते *wenn die Schuld anerkannt worden ist* (Gegens. अयद्भव) M. 8, 139. शतं प्रतिज्ञानाति P. 1, 3, 46, Sch. प्रतिज्ञात *angenehm, erwünscht*: प्रतिज्ञातो म एष वरः ÇAT. Br. 14, 9, 4, 8. एतद्वास्य प्रतिज्ञाततमं धाम 8, 6, 2, 24. 9, 1, 2, 22. — 2) *zusagen, versprechen*: प्रतिज्ञसे बधं चापि सर्वज्ञस्य MBh. 3, 10201. HARIV. 6825. BHATT. 14, 64. कार्यम् MBh. 5, 6021. प्रतिज्ञाय वनवासमिमं गुरोः R. 2, 109, 24. 3, 19, 17. 4, 30, 13. तस्मै निशाचरैश्चर्यं प्रतिज्ञसे RAGH. ed. Calc. 12, 69. प्रतिज्ञानामि ते वाक्यम् MBh. 3, 2780. प्रतिज्ञसे च भूयेन ततस्तत्त्वामिनिप्रकृः RĪGĀ-TAR. 4, 251. प्रतिज्ञातो हि भवता दुःखप्रतिशमो मम MBh. 5, 7485. 7.